

दुआ-24

अपने वालेदैन (अलैहिस्सलाम) के हक में हज़रत (अ0) की दुआ

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

ऐ अल्लाह! अपने अब्दे खास और रसूल मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम और उनके पाक व पाकीजा अहलेबैत (अ0) पर रहमत नाज़िल फ़रमा और उन्हें बेहतरीन रहमत व बरकत और दुरूद व सलाम के साथ खुसूसी इम्तियाज़ बख़्श, और ऐ माबूद! मेरे माँ बाप को भी अपने नज़दीक इज़्ज़त व करामत और अपनी रहमत से मख़सूस फ़रमा। ऐ सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाले।

ऐ अल्लाह! मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) पर रहमत नाज़िल फ़रमा। उनके जो हुक्क मुझ पर वाजिब हैं उनका इल्म बज़रिये इलहाम अता कर और उन तमाम वाजेबात का इल्म बे कम व कास्त मेरे लिये मुहयया फ़रमा दे। फिर जो मुझे बज़रिये इलहाम बताए उस पर कारबन्द रख और इस सिलसिले में जो बसीरत इल्मी अता करे उस पर अमल पैरा होने की तौफ़ीक़ दे ताके उन बातों में से जो तूने मुझे तालीम की हैं कोई बात अमल में आए बग़ैर न रह जाए और उस खिदमतगुजारी से जो तूने मुझे बतलाई है, मेरे हाथ पैर थकन महसूस न करें।

ऐ अल्लाह! मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) पर रहमत नाज़िल फ़रमा क्योंकि तूने उनकी तरफ़ इन्तेसाब से हमें शरफ़ बख़शा है। मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) पर रहमत नाज़िल फ़रमा क्योंकि तूने उनकी वजह से हमारा हक़ मख़लूक़ात पर कायम किया है।

ऐ अल्लाह! मुझे ऐसा बना दे के मैं इन दोनों से इस तरह डरूँ जिस तरह किसी जाबिर बादषाह से डरा जाता है और इस तरह उनके हाल पर शफ़ीक़ व मेहरबान रहूँ जिस तरह शफ़ीक़ मां (अपनी औलाद पर) शफ़क़क़त करती है और उनकी फ़रमाबरदारी और उनसे हुस्ने सुलूक के साथ पेश आने को मेरी आंखों के लिये इससे ज़्यादा कैफ़ अफ़ज़ा करार दे जितना चश्मे ख़्वाब आलूद में नीन्द का ख़ुमार और मेरे क़ल्ब व रूह के लिये इससे बढ़ कर मसरत अंगेज़ करार दे जितना प्यासे के लिये जरअए आब। ताके मैं अपनी ख़्वाहिश पर उनकी ख़्वाहिश को तरजीह दूँ और अपनी ख़ुशी पर उनकी ख़ुशी को मुक़द्दम रखूँ और उनके थोड़े एहसान को भी जो मुझ पर करें, ज़्यादा समझूँ। और मैं जो नेकी उनके साथ करूँ वह ज़्यादा भी हो तो उसे कम तसव्वुर करूँ।

ऐ अल्लाह! मेरी आवाज़ को उनके सामने आहिस्ता मेरे कलाम को उनके लिये खुशगवार, मेरी तबीयत को नरम और मेरे दिल को मेहरबान बना दे और मुझे उनके साथ नर्म व शफ़क़क़त से

पेश आने वाला करार दे। ऐ अल्लाह! उन्हें मेरी परवरिश की जज़ाए ख़ैर दे और मेरे हुस्ने निगेहदाशत पर अज़्र व सवाब अता कर और कमसिनी में मेरी ख़बरगीरी का उन्हें सिला दे। ऐ अल्लाह! उन्हें मेरी तरफ़ से कोई तकलीफ़ पहुंची हो या मेरी जानिब से कोई नागवार सूरत पेश आई हो या उनकी हक़तलफ़ी हुई हो तो उसे उनके गुनाहों का कफ़ारा, दरजात की बलन्दी और नेकियों में इज़ाफ़े का सबब करार दे।

ऐ बुराइयों को कई गुना नेकियों से बदल देने वाले, बारे इलाहा! अगर उन्होंने मेरे साथ गुफ़्तगू में सख़्ती या किसी काम में ज़्यादती या मेरे किसी हक़ में फ़रोगुजाशत या अपने फ़र्ज मन्सबी में कोताही की हो तो मैं उनको बख़्शता हूँ और उसे नेकी व एहसान का वसीला करार देता हूँ, और पालने वाले! तुझसे ख़्वाहिश करता हूँ के इसका मोआख़ेजा उनसे न करना। इसमें अपनी निस्बत उनसे कोई बदगुमानी नहीं रखता और न तरबीयत के सिलसिले में उन्हें सहल अंगार समझता हूँ और न उनकी देखभाल को नापसन्द करता हूँ इसलिये के उनके हुकूक मुझपर लाज़िम व वाज़िब, उनके एहसानात देरीना और उनके इनआमात अज़ीम हैं। वह इससे बालातर हैं के मैं उनको बराबर का बदला या वैसा ही एवज़ दे सकूँ। अगर ऐसा कर सकूँ तो ऐ मेरे माबूद! वह उनका हमहवक़्त मेरी तरबीयत में मशगूल रहना, मेरी ख़बरगीरी में रन्ज व ताब उठाना और खुद असरत व तंगी में रहकर मेरी आसूदगी का सामान करना कहाँ जाएगा भला कहाँ हो सकता है के वह अपने हुकूक का सिला मुझसे पा सकें और न मैं खुद ही उनके हुकूक से सुबुकदोश हो सकता हूँ और न उनकी ख़िदमत का फ़रीज़ा अन्जाम दे सकता हूँ। रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) पर और मेरी मदद फ़रमा ऐ बेहतर उनसे जिनसे मदद मांगी जाती है और मुझे तौफ़ीक़ दे ऐ ज़्यादा रहनुमाई करने वाले उन सबसे जिनकी तरफ़ (हिदायत के लिये) तवज्जो की जाती है। और मुझे उस दिन जबके हर शख्स को उसके आमाल का बदला दिया जाएगा और किसी पर ज़्यादती न होगी उन लोगों में से करार न देना जो माँ-बाप के आक़ व नाफ़रमाबरदार हों।

ऐ अल्लाह! मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) व औलाद (अ0) पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मेरे माँ-बाप को उससे बढ़कर इम्तियाज़ दे जो मोमिन बन्दों के माँ-बाप को तूने बख़शा है। ऐ सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाले। ऐ अल्लाह! उनकी याद को नमाज़ों के बाद रात की साअतों और दिन के तमाम लम्हों में किसी वक़्त फ़रामोश न होने दे।

ऐ अल्लाह! मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे उनके हक़ में दुआ करने की वजह से और उन्हें मेरे साथ नेकी करने की वजह से लाज़मी तौर पर

बख्श दे और मेरी सिफ़ारिश की वजह से उनसे कतई तौर पर राजी व खुशनूद हो और उन्हें इज्जत व आबरू के साथ सलामती की मन्ज़िलों तक पहुंचा दे।

ऐ अल्लाह! अगर तूने उन्हें मुझसे पहले बख्श दिया तो उन्हें मेरा शफ़ीअ बना। और अगर मुझे पहले बख्श दिया तो मुझे उनका शफ़ीअ करार दे ताके हमस ब तेरे लुत्फ़ व करम की बदौलत तेरे बुजुर्गी के घर और बख्शिश व रहमत की मन्ज़िल में एक साथ जमा हो सकें। यकीनन तू बड़े फ़ज़ल वाला कदीम एहसान वाला और सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला है।